वाराणसी मंडल

वाराणसी विश्व के सबसे पुराने शहरों में से एक है तथा भारत के सभी धार्मिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक शहरों में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। वाराणसी पवित्र गंगा नदी के तट पर स्थित है। **12 ज्योतिर्लिंगों** मे **भगवान शिव** का सबसे प्रसिद्ध **श्री काशी विश्वनाथ मंदिर** यहॉ स्थित है। यहॉ ने केवल भारत के विभिन्न हिस्सों से बल्कि दुनिया के हर देश के विदेशी पर्यटक भी प्रायः आते रहते हैं। विश्व प्रसिद्ध **बौद्ध तीर्थ स्थल सारनाथ** यहॉ से मात्र 08 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। यह वह स्थान है जहॉं भगवान बुद्ध ने अपना प्रथम् उपदेश दिया था। वाराणसी अपने कुटीर उद्योगों, हस्तशिल्प एवं उत्पाद के लिये भी प्रसिद्ध है जिसमें विश्व प्रसिद्ध **बनारसी साड़ी** भी शामिल है।

श्री काशी विश्वनाथ मंदिर

पूर्वोत्तर रेलवे के वाराणसी मंडल का **गठन 01 मई 1969** को किया गया था। इस मंडल के मुख्य मार्गों में ब्रॉड गेज लाइन का गोरखपुर–छपरा, भटनी–प्रयागराज रामबाग, छपरा–औंड़िहार, मऊ–शाहगंज, गोरखपुर–पनियहवा, इंदारा–फेफना, औंड़िहार–जौनपुर, कप्तानगंज–थावे और छपरा कचहरी–थावे, इंदारा–दोहरी घाट खंड है।

वाराणसी मंडल **मुख्यतः यात्री प्रधान मंडल** है। वर्ष 1981 तक जब गोरखपुर–सीवान खंड पर आमान परिवर्तन का कार्य शुरु नहीं हुआ था तब तक इस मंडल पर मूलतः मीटर गेज मार्ग प्रणाली थी। बाद में चरणबद्ध रुप में वाराणसी–भटनी (वर्ष 1991), वाराणसी– प्रयागराज रामबाग (वर्ष 1993–94), औंड़िहार–छपरा (वर्ष 1996), मऊ–शाहगंज (वर्ष 1997), गोरखपुर–पनियहवा (वर्ष 1997), इंदारा–फेफना (वर्ष 1999), औंड़िहार–जौनपुर (वर्ष 2012), कप्तानगंज–थावे (वर्ष 2011) एवं छपरा कचहरी–थावे (वर्ष 2016–17), इंदारा–दोहरीघाट (वर्ष 2022–23) खंड का आमान परिवर्तन कार्य पूरा किया गया। इसके परिणामस्वरुप, वाराणसी मंडल ब्रॉड गेज मंडल बन गया है। मंडल पर मालगाड़ियों को चलाने के लिये प्रमुख मार्ग के रुप में गोरखपुर–छपरा, वाराणसी– गोरखपुर, प्रयागराज रामबाग–छपरा, गोरखपुर–पनियहवा और इंदारा–फेफना शामिल हैं।

इन मार्गों से देश के उत्तरी और उत्तर पूर्वी क्षेत्र से आने–जाने वाली रेल गाड़ियॉ गुजरती हैं। इस **मंडल के 08 इंटरचेज प्वाइंट्स** हैं : ये हैं – छपरा ग्रामीण स्टेशन (सोनपुर मंडल के साथ), पनियहवा (समस्तीपुर मंडल के साथ), गोरखपुर छावनी (पूर्वोत्तर रेलवे, लखनऊ मंडल के साथ), जौनपुर, वाराणसी और लोहता (उत्तर रेलवे, लखनऊ मंडल के साथ) और प्रयागराज जं. (उत्तर मध्य रेलवे, प्रयागराज के साथ) ।

चीनी उत्पादन का एक मात्र उद्योग वाराणसी मंडल में रहा है। यद्यपि, इस क्षेत्र में 31 चीनी मिलें है जिनमें से अधिकांश या तो बीमार हैं या बंद हैं। अतः मंडल के राजस्व का मुख्य स्रोत विशाल यात्री यातायात ही है ।